SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

नारी विमर्श : नारी अस्मिता का स्वर

रविन्द्र चौबे, (Ph.D.), हिंदी विभाग,
किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
रविन्द्र चौबे, (Ph.D.), हिंदी विभाग,
किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/11/2021
Revised on : -----
Accepted on : 22/11/2021
Plagiarism : 03% on 15/11/2021

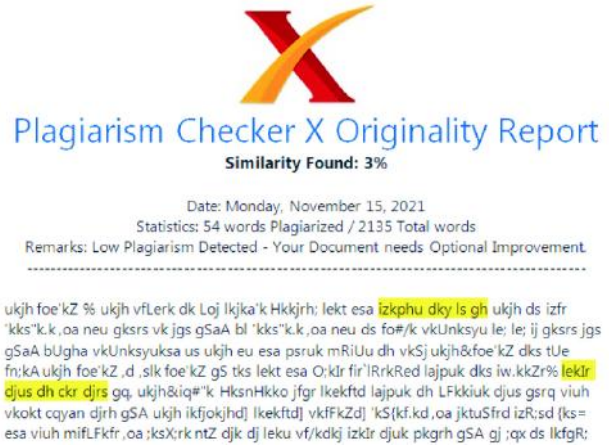
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 3%

Date: Monday, November 15, 2021
Statistics: 54 words Plagiarized / 2135 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

ukjh foe'kZ % ukjh vfLerk dk Loj lkjka'k Hkkjrh; lekt esa izkphu dky ls gh ukjh ds izfr 'kks"k.k ,oa neu gksrs vk jgs gSaA bl 'kks"k.k ,oa neu ds fo#/k vkUnksyu le; le; ij gksrs jgs gSaA bUgha vkUnksyuksa us ukjh eu esa psruk mRiUu dh vkSj ukjh&foe'kZ dks tUe fn;kA ukjh foe'kZ ,d ,slk foe'kZ gS tks lekt esa O;kIr fir`lRrkRed lajpuk dks iw.kkZr% lekIr djus dh ckr djrs gq, ukjh&iq#"k HksnHkko jfgr lkekftd lajpuk dh LFkkiuk djus gsrq viuh vkokt cqyan djrh gSA ukjh ikfjokjhd] lkekftd] vkfFkZd] 'kS{kf.kd ,oa jktuSfrd izR;sd {ks= esa viuh mifLFkfr ,oa ;ksX;rk ntZ djk dj leku vf/kdkj izkIr djuk pkgrh gSA gj ;qx ds lkfgR;

शोध सार

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही नारी के प्रति शोषण एवं दमन होते आ रहे हैं। इस शोषण एवं दमन के विरुध आन्दोलन समय समय पर होते रहे हैं। इन्हीं आन्दोलनों ने नारी मन में चेतना उत्पन्न की और नारी–विमर्श को जन्म दिया। नारी विमर्श एक ऐसा विमर्श है जो समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक संरचना को पूर्णातः समाप्त करने की बात करते हुए नारी–पुरुष भेदभाव रहित सामाजिक संरचना की स्थापना करने हेतु अपनी आवाज बुलंद करती है। नारी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति एवं योग्यता दर्ज करा कर समान अधिकार प्राप्त करना चाहती है। हर युग के साहित्य में नारी के स्वरुप में परिवर्तन आया है । साहित्यकारों ने समयानुसार नारी समस्याओं को अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है और नारी समस्या निराकरण के सुझाव भी प्रस्तुत किये हैं। नारी विमर्श ने ही स्त्रियों के मन में अस्मिता का भाव जागृत किया है। भारतीय नारी विमर्श पुरुषसत्तात्मक समाज का विरोध करता है, ना की पुरुषों का। यह विमर्श सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक समानता आदि का पुरजोर समर्थन करता है।

मुख्य शब्द

नारी विमर्श, अस्मिता, भारतीय समाज, हिन्दी साहित्य.

प्रस्तावना

भारतीय समाज में नारी को पितृसत्तात्मक समाज ने प्रारंभ से ही दासता की जंजीरों में जकड़ कर रखा गया और उसे नरकीय जीवन जीने के लिए बाध्य किया गया। भारतीय समाज में कहा जाता है कि नारी शक्ति स्वरुपा है, इसलिये प्रकृति ने उसे सृजन का दायित्व सौंपा है। पुरुष को जन्म देने वाली नारी स्वयं शोषण का

शिकार होती है। समाज ने नारी को क्या दिया? नारी विलास का साधन बनी, उसे अबला कहा गया, उसके सतीत्व की परीक्षा ली गई, क्रय विक्रय की सामग्री बनी। मृत पति की चिता पर सती बनाकर जिंदा जला दिया गया, यौन शोषण हुआ, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज उत्पीड़न हुआ और इस तरह नारी समाज में हाशिये पर आ गई। नारी का शोषण घर–परिवार में ही नहीं हो रहा है, जब वह नौकरी प्रशासन या व्यवसाय करने समाज में आती है तब भी उसे कई बार शोषण का शिकार होना पड़ता है। नारी कुछ ज्यादा नहीं चाहती वह तो समाज में पुरुष की तरह स्वतंत्रता और समानता चाहती है इसलिये पितृसत्तात्मक समाज का विरोध कर पारंपरिक बेड़ियों से मुक्ति की कामना करती है। नारी विमर्श अधिकारों की लड़ाई है। यह लड़ाई उस मानसिकता से है, जो स्त्रियों को पुरुषों से हीन मानकर उसे दोयम दर्जे का व्यक्ति मानती है। यह लड़ाई उस व्यवस्था से है, जहां निर्णय लेने का अधिकार केवल पुरुषों को प्राप्त है।

नारी विमर्श ने पितृसत्तात्मक समाज के संस्कृतियों और सभ्यता के वास्तविक स्वरुप का दर्शन कराया और इस विमर्श के माध्यम से समाज की सच्चाईयों को सामने लाने का कार्य कर रही है। नारी विमर्श की अवधारणा आधुनिक युग की देन है। स्त्री की स्व की पहचान कराना ही नारी विमर्श है। नारी विमर्श में पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की परधीन स्थिति, उसके कारणों और उसके निराकरण के उपायों का उललेख किया जाता है। "नारी विमर्श स्त्री की वाणीविहीन, आत्महीन, स्वत्व अस्तित्व को रेखांकित करता है। स्त्री को हाशिये पर रखने और उसका एक परजीवी की भांति गुलामवत जीवन जीने को नारी विमर्श में ही रेखांकित किया जाता है।" नारी विमर्श के रुप में पश्चिम से आयी इस नारीवादी विचारधारा को भारतीय समाज में प्रारंभ करने का श्रेय सामाजिक कुरीतियों के माध्यम से स्त्रियों के साथ होने वाले अत्याचार के विरोध में आवाज बुलंद करने वाले दयानंद सरस्वती, अंबेडकर, ईश्वर चंद विद्यासागर, राजा राममोहन राय जैसे महान समाज सुधारकों को जाता है, जिन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों से स्त्री को बचाने का संकल्प लिया था। वहीं स्त्रियों की अधिकार, स्वतंत्रता और सम्मान के लिए कई महिला सुधारकों नें भी समाज में जाग्रति लाने का प्रयास किया जिसमें रमाबाई, ताराबाई शिंदे, सावित्री बाई फुले आदि हैं। इस गंभीर विषय पर रविन्द नाथ टैगोर, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा ने भी लिखा और स्त्री के प्रति संवेदना रखने की बात उठाई।

हिन्दी कथा साहित्य में नारी विमर्श ने आठवें दशक में दस्तक दी। महिला लेखिकाओं में ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुदगल, मृदुला गर्ग, मंजुला गुप्ता, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पाण्डेय, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, सुधा अरोरा, अलका सरावगी आदि ने नारी मन की पीड़ा, घुटन और तड़प आदि को अपनी रचनाओं के माध्यम से आवाज प्रदान की है। अमृता प्रीतम (रसीदी टिकट), कृष्णा सोवी (मित्रों मरजानी), मन्नू भंडारी (आपका बंटी) चित्रा मुद्गल (एक जमीन अपनी), ममता कालिया (बेघर), मृदुला गर्ग (कठ गुलाब), मैत्रेयी पुष्पा (अल्मा कबूतरी), प्रभा खेतान (छिन्नमस्ता), कुसुम अंचल (अपनी अपनी यात्रा), उषा प्रियंवदा (पचपन खंबे लाल दीवार), दीप्ती खंडेलवाल (प्रतिध्वनियां में नारी के विविध रुप), उसके जीवन की विविध समस्याओं और उसके संघर्ष को देखा जा सकता है। तसलीमा नसरीन ने स्त्री की स्थिति के बारे में लिखा– "जन्म के बाद से ही स्त्री, पुरुष निर्मित विभिन्न नियमों और नीतियों के प्रहार को झेलते हुए जिंदा रहती है। स्त्री का शरीर लहुलुहान है। वह जिस रास्ते से होकर चलती है उस पर कांटे बिछे हुए हैं।"[2] आज की नारी का असंतोष इस बात को लेकर है कि मनुष्य के रुप में समाज में जो अधिकार पुरुषों को प्राप्त है उसे उनसे वंचित क्यों कर दिया गया। नारी को पारंपरिक रुढ़ियों, सड़ी गली मान्यताओं, अंधविश्वासों के शोषण से मुक्त कर एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रुप में समाज में प्रतिष्ठित कराना ही सच्चा नारीवाद है। पुरुष सत्तात्मक समाज स्त्री को संभोग एवं संतानोत्पत्ति का साधन मानता है। "स्त्री को मापने का पैमाना उसकी देह ही है।"[3] नारी विमर्श का कार्य स्त्री को जागरुक करना है ताकि वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हो, अपने आत्मसम्मान को जाने, अपने अस्तित्व को पहचाने। मृणाल पांडे कहती है–"नारीवाद कतई स्त्रियों को वृहत्तर समाज से अलग–अलग रखकर देखने और हर क्षेत्र में पुरुषों के खिलाफ उन्हें प्रोत्साहित करने का दर्शन नहीं। यह तो एक समग्र दृष्टिकोण है जो संवेदनशील नागरिकों में पहले शोषित एवं प्रवंचित स्त्रियों की स्थिति के प्रति सहानुभूति और मानवीय दृष्टिकोण विकसित करके उसके उजास में उन्हें अपने पूरे समाज के शोषित और प्रवंचित तबकों को

समझने की क्षमता देता है।"

नारी विमर्श बहुआयामी है। इसे किसी एक परिभाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री की दशा की जांच पड़ताल करना, स्त्री की दुर्दशा को समझना और व्यक्त करना और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करना उसका उद्देश्य है। इसके लिये स्त्रियों को अपने अधिकारों के प्रति चेतना ला सकता है, क्योंकि किसी भी समस्या के हल के लिये समस्या के कारणों को जानना आवश्यक है। महादेवी वर्मा ने लिखा–"अधिकार के इच्छुक व्यक्ति को अधिकारी भी होना चाहिये अर्थात् यदि स्त्रियां अपने अधिकारों, स्वामित्व के अधिकारों से वंचित है, तो क्या उनमें अधिकारों के बारे में चेतना भी है कि वे अधिकार उन्हें कैसे मिलेंगे, क्यों मिलेंगे और मिलेंगे भी तो क्या भिक्षावृत्ति से"[5] महादेवी स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति जागरुक होने के लिये प्रेरित कर रही है क्योंकि यदि पुरुष स्त्री को पूर्ण अधिकार मांगने पर नहीं दे सकता तो स्त्री को अपने अधिकार छीनने होंगे। महादेवीर वर्मा का कहना है–"हमें न किसी पर जय चाहिये न किसी से पराजय।"[6] वस्तुतः स्त्रीवादी लेखन पुरुष के चंगुल से मुक्त होने को छटपटाती स्त्री की पीड़ा को उजागर करने के लिये उसके मौन को तोड़ने के लिये प्रयासरत है। यह एक ऐसी विचारधारा है जो परिवार, समाज एवं कार्यस्थल पर स्त्री पर हो रहे अत्याचारों की व्याख्या करती है, पुरुष आधिपत्य और पितृसत्तात्मक समाज के दमन के खिलाफ अपनी आवाज उठाती है। अभिशप्त जीवन जीने को विवश स्त्री कभी कन्या भ्रूण हत्या, अशिक्षा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, बेमेल विवाह, तलाक, दहेज प्रथा, यौन शोषण, बलात्कार जैसी घटनाओं से से त्रस्त है। नारी विमर्श को अलग–अलग कर के देश काल, वातावरण और परिस्थितियों के अनुसार जाना और समझा जा सकता है।

पुरुष नारी को परिवार रुपी पिंजरे में कैद करके रखना चाहता है। स्त्री की पहचान को उसके ज्ञान या बुध्दिमत्ता से नहीं आंका गया, उसकी एकमात्र पहचान उसकी देह है। पुरुषों ने श्रम विभाजन भी इस तरह से किया कि बौध्दिक कार्य, राजनैतिक कार्य, ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रों को अपने पास रख स्त्री को रसोई घर और शयन कक्ष के ही उपयुक्त बताया। राजेन्द्र यादव लिखते हैं– "स्त्री अपनी बौध्दिक या अन्य उपलब्धियों के लिये जितनी हायतौबा मचाती रहे, पुरुष की जिद है कि साम, दाम, दंड, भेद से वह उसे कमर, कूल्हे, नितंब, छातियों से ऊपर नहीं उठने देगा।"[7] स्त्री को न तो पुरुषों की भांति स्वतंत्र जीवन जीने के अवसर मिलते हैं न प्रतिभा को व्यक्त करने की क्योंकि पुरुष सत्ता ने स्त्री को स्वतंत्र नहीं बनने दिया। अशिक्षित और ग्रामीण महिलाएं ही नहीं तथाकथित आधुनिक, शिक्षित एवं स्वतंत्र कही जाने वाली स्त्रियां भी उपेक्षित है। तसलीना नसरीन ने वर्तमान समाज में नारी की दशा को व्यक्त करते कहती हैं–"क्या आज भी पुरुष निर्मित धर्म और उनका विकृत समाज लड़कियों की बलि नहीं चढ़ा रहा? यह सही है कि वह उन्हें जिंदा नहीं गाड़ रहा या आग में नहीं जला रहा, लेकिन यहां की जीवित लड़कियां भी भला कितनी जीवित हैं? वे अंदर–अंदर अपनी आशा को ढोती तो फिर रही हैं।"[8]

वस्तुतः नारी विमर्श नारी की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं दैहिक स्वतंत्रता का पक्षधर है। स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों में कमी नहीं आई है। स्त्रियों पर आर्थिक, सामाजिक एवं मौन उत्पीड़न अब भी हो रहे हैं। स्त्री आंदोलनों को इन सारी चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी मुक्ति का मार्ग खोजना होगा। नारी विमर्श वर्गीय, जातीय, नस्लीय आधार पर समाज में नारियों पर हो रहे अत्याचारों के प्रति संघर्षरत् है तथा एक ऐसे समतामूलक समाज के लिये प्रतिबद्ध है, जिसमें स्त्री एवं पुरुषों को बराबरी का हक मिले। नारी विमर्श एक साहित्यिक आंदोलन है, जिसमें स्त्री अस्मिता को केन्द्र में रखकर स्त्री साहित्य की रचना की गई। यही स्त्री पुरुष की समानता के लिये सामाजिक आंदोलन भी है। यह चिंतन स्त्रियों पर होने वाले अन्याय के विरुद्ध है। नारी का सुखद भविष्य उसे न्याय, समानता और स्वतंत्रता प्रदान किये बिना संभव नहीं। नारी विमर्श स्त्री के अस्तित्व की जांच पड़ताल करके यह स्पष्ट करता है कि नारी को समाज में न किसी पर प्रभुता चाहिये, न किसी का प्रभुत्व, केवल अपना वह स्थान चाहिये जिसकी वह हकदार है। उन्हें सत्ता नहीं चाहिये, वह केवल अपने अस्तित्व की पहचान चाहती है। एक स्वतंत्र इकाई के रुप में जीना चाहती है, खुली हवा में सांस लेना चाहती है, आकाश छूना चाहती है। जबकि पुरुष हमेशा नारी को नियंत्रण में रखने के लिये शास्त्रों के साथ शस्त्रों का प्रयोग भी आवश्यक मानता है। वह स्त्री को तोड़कर, मसलकर, प्रताड़ित कर उसके मन में खौफ बैठाकर उसे पालतू पशु की

तरह नियंत्रित करना चाहता है। इसलिये प्रत्येक स्त्री को आर्थिक रुप ससे आत्मनिर्भर होना आवश्यक है तभी वह पुरुष के शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद कर पाएगी। आर्थिक आत्मनिर्भरता ही नारी को पीड़ित शोषित होने से बचाती है। तसलीमा नसरीन कहती है – "जिस दिन यह समाज स्त्री के शरीर का नहीं, शरीर के अंग–प्रत्यंग का नही, स्त्री की मेधा और श्रम का मूल्य देना सीख जाएगा, सिर्फ उस दिन स्त्री मनुष्य के रुप में स्वीकृत होगी।"[9]

निष्कर्ष

पुरुषवादी विचारधाराओं से आज की नारी मुक्ति चाहती है। इसके लिए नारी को स्वयं सिद्धा बनकर, अपनी भीरुता से, अपनी अज्ञानता से, अपनी अशिक्षा से, अपनी जड़ता से, सड़ीगली मैली हो चुकी रुढ़ियों से मुक्त होने का प्रयास करना होगा,। नारी विमर्श के साथ नारी सशक्तिकरण की बातें भी उठ कर सामने आ रही है। नारी विमर्श विचारधारा है। बदलते समय में बदलती दृष्टि से हमें सोचने की आवश्यकता है। यह समय कुछ जर्जर और रुढ़ परंपराओं से मुक्त होने का है। एक संतुलनात्मक लचीलापन और आधुनिक सोच ही पितृसत्तात्मक सोच एवं विचारधारा में परिवर्तन लाते हुए रुढ़ परंपराओं से मुक्ति दिला सकता है। इसलिए समाज में परिवर्तन लाने एवं विकास के लिए शिक्षा जरुरी है। नारी विमर्श बहस का मुद्दा नहीं जागृति का मुद्दा है। हमें यह स्वीकारना होगा कि नारी एक जीवंत सत्ता है। स्वस्थ्य और गतिशील समाज के लिये स्त्री की भूमिका और उसके दृष्टिकोण, उसकी सुरक्षा और उसके सशक्तिकरण पर विचार होना चाहिये तभी स्त्री विमर्श सार्थक सिद्ध होगा। स्त्रियों को अपनी खामोशी तोड़नी होगी, अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों का विरोध करना होगा। अपनी देह और अपनी अस्मिता पर लगे प्रश्नचिन्हों के उत्तर ढूंढने होंगे। अपना खोया आत्मसम्मान प्राप्त करना होगा, आर्थिक रुप से स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर बनना होगा। भारतीय नारी विमर्श का उद्देश्य पुरुष से युध्द करना नहीं वरन् स्त्री को जागरुक एवं पुरुष को संवेदनशील बनाना है।

संदर्भ सूची

1. मुक्ता त्यागी, *समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी विमर्श,* अमन प्रकाशन कानपुर।
2. नसरीन तसलीमा, *नष्ट लड़की नष्ट गद्य,* (अनु.) मुनमुन सरकार, वाणी प्रकाशन दिल्ली पृष्ठ 76।
3. वही पृ.सं. 15।
4. पांडे मृणाल, *परिधि पर स्त्री,* राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 47।
5. वर्मा महादेवी, *श्रृंखला की कड़ियां,* भूमिका से।
6. वर्मा महादेव, *श्रृंखला की कडियां,* लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं. 27–28।
7. यादव राजेन्द्र, *आदमी की निगाह में औरत,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 28।
8. नसरीन तसलीमा, *औरत के हक में,* वाणी प्रकाशन, पृ.सं. 47।
9. वही, पृ.सं. 99।

****